International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-11-2020; Accepted: 30-11-2020; Published: 15-12-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 156-160

नेपाली मुक्तिसंग्राम (1950 -1951) में रेणु की भूमिका संदर्भ: रेणु के रिपोर्ताज 'नेपाली क्रांति कथा' से

तुलसी छेत्री
शोधार्थी, हिंदी विभाग, जैन संभाव्य विश्वविद्यालय, बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत

सारांश
रेणु के लेखन का स्वरूप भारतीय ही नहीं बल्कि वैश्विक भी था। नेपाल पर उनके लिखे हुए रिपोर्ताज़ "नेपाली क्रांति कथा" से इस बात को बखूबी समझा जा सकता है। नेपाल के साथ रेणु का संबंध घनिष्ठता का है। रेणु का नाम नेपाल के राजनीतिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में अविस्मरणीय हैं। राजनीति से साहित्य और साहित्य से फिर राजनीति की ओर चहलकदमी करते हुए रेणु का मकसद मात्र लोकतान्त्रिक सरकार का समर्थन करना नहीं था। सही मायने में वे भारत और नेपाल की जनता को स्वतंत्र बनाना चाहते थे। रेणु की कलम ने 'विराटनगर मिल आंदोलन' को जन्म दिया और मुक्ति सेना के प्रचारक रेणु ने नेपाली क्रांति को। रिपोर्ताज शैली में लिखी गई अपनी पुस्तक 'नेपाली क्रांति-कथा' में रेणु ने राणाशाही के विरुद्ध संघर्ष का आंखों देखा विवरण कर उस मुक्ति-संग्राम को जीवंत कर दिया है।

मूलशब्द: राणाशाही, सानो-आमाँ, लोकतान्त्रिक, जनक्रांति, विराटनगर, गोर्रिल्ला-युद्ध, विचारधारा

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने हिन्दी साहित्य में अपनी अलग पहचान पाई है तो उसे केवल आंचलिकता के आधार पर कहना उनकी 'पार्कर' कलम की अवहेलना करने जैसा होगा। उनकी कलम का जादू गद्य और पद्य दोनों रूप में साहित्य में विद्यमान है। उपन्यास, कहानियाँ, रिपोर्ताज, स्केच, संस्मरण, आत्म संस्मरण लेख, साहित्य की हर विधा को रेणु की कलम ने उत्कृष्ट ही बनाया। रेणु की साहित्यिक भूमि व्यापक है, रेणु ने अपने विचारों, दर्शन और चिंताओं को पाठक के सामने रख उनकी सोच पर सब छोड़ दिया। वर्तमान को देखते हुए रेणु कभी अतीत के पन्नों को उलटते हैं तो कभी भविष्य में यथासंभव झांकने का प्रयास करते।

रेणु के इलाके का सीमावर्ती क्षेत्र नेपाल का विराटनगर शहर है, यहाँ उनके जीवन का एक लंबा समय बीता है। वहाँ के परिवेश के साथ रेणु का एक गहरा रागात्मक सम्बन्ध है। नेपाल को अपनी 'सानो आमाँ' अर्थात छोटी माँ कहने वाले रेणु, नेपाल के बारे में बहुत सम्मान के साथ अपने स्केच 'नेपाल-मेरी सानो आमाँ' में लिखते हैं, "जब कभी नेपाल की धरती पर पाँव रखता हूं, पहले झुककर एक चुटकी धूल सिर पर डाल लेता हूँ । रोम-रोम बज उठते है- स्मृतियाँ जग पड़ती हैं। जय नेपाल! नेपाल मेरी सानों आमाँ।"[1]

नेपाल के प्रति यह सम्मान, यह आत्मीयता एकतरफा नहीं थी । नेपाल खासकर कोइराला परिवार ने रेणु के व्यक्तित्व को निखारने, उनके भीतर के साहित्यकार को दिशा-निर्देश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । उनकी क्रांतिकारी

प्रवृत्ति, दमन का विरोध करने की उग्रता और उनके विचारों पर नेपाल की एक अमिट छाप दिखाई पड़ती है। नेपाल से अपने जुड़ाव को, वहाँ के संघर्षपूर्ण अस्तित्व की लड़ाई को, राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल के दौर को अपने रिपोर्ताज 'सरहद के उस पार' और 'नेपाली क्रांति कथा' में वर्णित करते हैं। वस्तुस्थिति का प्रत्यक्ष निरीक्षण और यथा तथ्य उसका विवरण इन दोनों रिपोर्ताज में सफलता-पूर्वक किया है । रेणु का नाम नेपाल के राजनीतिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में अविस्मरणीय हैं। सन् 1935-1942 ई. तक का काफी समय रेणु ने कोईराला निवास में गुजारा। जहाँ साहित्य, राजनीति और कला तीनों पक्षों का गहन अध्ययन करने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ । साथ ही कोइराला परिवार का सानिध्य, प्रेम, सहयोग सब कुछ मिला। नेपाल की आंतरिक स्थिति का बोध, निरंकुश राणा शाही का दबदबा और नेपाल को लोकतांत्रिक देश बनाने की परिकल्पना का स्वरूप भी कोइराला निवास में रहते हुए रेणु ने तय किया। नेपाल बाह्य शक्तियों से स्वतंत्र तो था लेकिन आंतरिक राणा शाही ने उसे खोखला कर दिया था । रेणु ने वहाँ हो रहे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक बदलावों को खुली आँखों से देखा था। रेणु भली-भांति जानते थे की किस तरह एक सेना के जवान (जंग बहादुर राणा) ने छल द्वारा संपूर्ण नेपाल की शक्तियों को अपने अधीनस्थ कर लिया और अबोध जनता को जीविका के साधन जुटाने में इतना व्यस्त कर दिया की सौ वर्षों तक 'श्री-3' की सरकार बिना रोक टोक के फलीभूत होती रही । असली राजा अपने महल में विलासपूर्ण माहौल में विराजमान राणाओं की कठपुतली मात्र था और राजकाज के अहम फैसले राणाओं के हाथ में चले गए थे। तब से लेकर लगभग 105 वर्षों तक नेपाल में राणाओं का शासन चलता रहा और नेपाल का इतिहास राणाओं का इतिहास बन गया । निरकुंश राणाओ की तानाशाही पर चर्चा करते हुए रेणु अपने रिपोर्ताज नेपाली क्रांतिकथा में व्यंग्यपूर्ण शैली में लिखते हैं -"नेपाल के तत्कालीन तीन सरकार चंद्र शमशेर जंग बहादुर राणा इंग्लैंड गए थे। वहाँ अपने सम्मान में आयोजित एक भोज सभा में भाषण देते हुए उन्होंने अंग्रेज राजनेताओं को एक कीमती सलाह देने की 'कृपा' की ('तीन सरकार' जो कुछ करें, उनकी प्रत्येक क्रिया खाना-पीना-सोना के साथ 'कृपा' शब्द जोड़कर नहीं बोलने या लिखने वालों को तुरंत चालान कर देने का हुक्म है। हुकूमीराज नेपाल में हुकूमीराज अर्थात जहाँ 'तीन सरकार' के मुंह से निकला हुआ कोई भी हुकुम कानून का रूप ले लेता है)"[2]

नेपाल की जीर्ण-शीर्ण शिक्षा व्यवस्था को देख रेणु का हृदय विचलित हो उठता । राणा सरकार की शिक्षा के प्रति अवहलेना का किस्सा बयान करते हुए रेणु लिखते हैं, "...महानुभाव, आप लोगों ने हिंदुस्तान के हर शहर में कॉलेज और हर गांव में स्कूल खोलने की आबाद अनुमति दे दी है आप यह आशा भी रखते हैं कि हिंदुस्तान के लोग 'स्वराज' की मांग ना करें..... मेरे देश में देखिए स्कूल कॉलेज की बात तो दूर एक पाठशाला तक खोलने की इजाजत हम नहीं देते। मेरे देश में, मेरे परिवार यानी राणाओ के बच्चों की पढ़ाई के लिए स्थापित 'दरबार स्कूल' के अलावा कोई चटसार तक नहीं.....सुख और चैन से शासन करना है तो प्रजा को मूर्ख बना कर रखिए...।"[3]

नेपाल में लोकतंत्र की बहाली का स्वप्न जितना भारत के लोगों ने देखा उतना ही भारत की आज़ादी का सपना भी नेपाल के लोगों ने भी देखा था। ज्ञात हो कि नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला (जो नेपाल की राजनीति और साहित्य में बहुचर्चित नाम है) और उनके पिता कृष्णाप्रसाद कोइराला, बिहार सोशलिस्ट पार्टी के ना केवल सक्रिय सदस्य थे बल्कि 'भारत छोडो आंदोलन' में भी उन्होंने

सक्रिय रूप से भाग लिया था। इसके बारे में रेणु लिखते हैं - “1942 में ‘भारत छोड़ो’ आंदोलन के सिलसिले में इधर (भारत में)’बापू’ आगा खाँ के राजभवन में नज़रबंद थे और उधर (नेपाल में) ‘पिताजी’(कृष्णप्रसाद कोइराला) काठमांडो की एक कालकोठरी में । …….. जी हाँ, ‘भारत छोड़ो’ आंदोलन के सिलसिले में ही- भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में सक्रिय सहायता करने और सहानुभूति रखने के जुर्म में राणाशाही ने उन्हें नज़रबंद करके-अंग्रेजी सरकार के हुक्म का वफादारी से पालन किया।”[4]

राजनीति से साहित्य और साहित्य से फिर राजनीति की ओर चहलकदमी करते हुए रेणु का मकसद मात्र लोकतान्त्रिक सरकार का समर्थन करना नहीं था। सही मायने में वे भारत और नेपाल की जनता को स्वतंत्र बनाना चाहते थे। रेणु की कलम ने ‘विराटनगर मिल आंदोलन’ को जन्म दिया और मुक्ति सेना के प्रचारक रेणु ने नेपाली क्रांति को। रिपोर्ताज शैली में लिखी गई अपनी पुस्तक ‘नेपाली क्रांति-कथा’ में रेणु ने राणाशाही के विरुद्ध संघर्ष का आंखों देखा विवरण कर उस मुक्ति-संग्राम को जीवंत कर दिया है।

नवंबर 1950 में राजा त्रिभुवन के सपरिवार भारतीय दूतावास पहुंचने के पश्चात नेपाल में व्यापक रूप से जनक्रांति की शुरुआत हुई। जिसकी पृष्ठभूमि कई वर्षों से तैयार की जा रही थी। ‘सानो आमाँ’ की एक पुकार पर रेणु मुक्ति सेना की फौजी वर्दी में बंदूक लेकर मोर्चे पर कूद पड़े। अपनी ‘पार्कर-51’ कलम और वायरलेस कंधों पर बांधे इस आंदोलन में जन संपर्क अधिकारी के रूप में रेणु पर्चे गीत लिखते। यह गीत सही मायने में नेपाली जनमानस के लिए शंखनाद था । जिसके आह्वान पर नेपाली जनता ने लोकशाही की स्थापना के लिए राणाशाही के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया था । नेपाल से संबंधित इन रिपोर्ताज़ में रेणु द्वारा वर्णित दृश्य सहज ही चलचित्र के रील की भाँति पाठकों के आगे घूमते प्रतीत होते हैं। जिनको पढ़ते समय पाठक-दर्शक और श्रोता बन जाते हैं। विराटनगर के मिल मजदूरों की दयनीय दुर्दशा, राणा शाही की निर्ममता, विभिन्न संगठनों के बीच का मन मुटाव, पात्रों की मानसिक उथल-पुथल, हाव-भाव पाठकों के सामने घूमते रहते हैं। जिससे घटनाओं के क्रम में सजीवता, रोमांचकता और विश्वसनीयता दिखाई देती है।

रेणु ने क्रांति के समय नेपाली कांग्रेस के प्रचार और प्रकाशन तथा विराटनगर में स्थापित एक गैर कानूनी आकाशवाणी के संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

घनी तराई के बीहड़, विराटनगर, कोईराला निवास, धनकुट्टी, मालखाना, वीरगंज, कोशी से पटना और कलकत्ते तक में हो रहे इस क्रांति के सिलसिलेवार घटनाक्रम का ‘नेपाली क्रांति कथा’ में विवेचन किया है।

गोरिल्ला युद्ध का श्री गणेश करते हुए, साथ ही ड्रम ड्रम की ध्वनि, टैंको, मशीन गन और राइफल की भट, भट, भट, धांय, धांय, बम के गोलों के बीच दुर्गंध, कोलाहल, जय ध्वनि का ऐसा चित्रण की मानो पाठक स्वयं इस क्रांति का एक सिपाही हो, ऐसा था 'रेणु' की कलम का जादू। जेलखाना, स्कूल का मैदान, सरकारी अफसरों के कैंप, अस्त्रागार, ट्रेज़री, फौजी बैरक हर कोने का बारीकी से अध्ययन और विवरण किया 'रेणु' ने इस रिपोर्ताज में किया है। रेणु ने शब्दों का चयन करने में साहित्य की पुरानी पाटी से निकलकर आम जन भाषा का प्रयोग किया है। स्थूल वर्णन के स्थान पर चेतना प्रवाह है, जिससे उसके अर्थ गंभीर और पूर्ण उत्कर्ष हो जाते हैं। रिपोर्ताज़ के वाक्य गठन, जीवंत अनुभव के कथ्य का प्रस्तुतीकरण करते हैं। रेणु ने विविध भाषाओं के प्रयोग से सूक्ष्म संवेदनाओं को उकेरा है। उनकी भाषा उनकी प्रौढ़ लेखनी का सशक्त रूप है। जहाँ

एक ओर छोटे अधूरे संवाद मनोःस्थिति को दर्शाते हैं तो दूसरी ओर विवरणात्मक संवाद परिवेश का सजीव वर्णन करते हैं। रेणु का अनुभव, अनुभूति और भावनाओं की अभिव्यक्ति उनके साहित्य जगत को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाते हैं।

आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने में जहां एक ओर बि्कू पटना से,तरापद बाबू कलकत्ते से, पूर्णिया सोशलिस्ट पार्टी के जवान, डॉ.कुलदीप झा,भोला चेटर्जी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज़ के प्रसिद्ध पूरन सिंह का उल्लेख मिलता है, वहीं इन सबके बीच में कोईराला परिवार का चित्रण, खरदारनी और उसके सात महीने के शिशु तीरथ, पुष्पा और गैबी का मार्मिक दृश्य, नेपाली नौजवान भाईयों की जिद्द - "इस बार दो दिन पहले ही टीका लगा दो दीदी"[5] पाठकों के हृदय में एक साथ संघर्ष, हर्ष, अवसाद और रोमांच के क्षण उत्पन्न करता है उनके पात्र कितनी ही जगह हमें आभास दिलाते है जैसे हमारे आस पास खड़े रह कर संवाद कर रहे हो। 17 फरवरी 1951 को त्रिपक्षीय समझौता के पश्चात रेणु का लोकतंत्र और राजनीतिक व्यवस्था से मोहभंग का व्यापक चित्रण भी प्रस्तुत होता है। यही कारण था की रेणु ने इस क्रांति को असफल तो नहीं किन्तु असमाप्त क्रांति की संज्ञा दी। असफल न मानने के पीछे तर्क देते हुए रेणु लिखते हैं -"युद्ध-भूमि से समझौते के टेबल पर पहुँचकर नेपाली कांग्रेस के नेताओं ने गलत किया या सही-यह सदा विवाद का विषय बना रहेगा। किन्तु नेपाल-क्रांति में विराटनगर ने अपनी शानदार और प्रमुख भूमिका का जिस बहादुरी से निर्वाह किया उसको सभी स्वीकार करेंगे। अविस्मणीय रहेगा विराटनगर का अवदान ....!!!"[6] वहीं सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हुए रेणु इस समझौते पर अपने विचारों को व्यक्त करते हुए लिखते हैं- "आदेश आया है- शपथ ग्रहण करने के दिन प्रजातंत्र नेपाल रेडियो का कोई प्रतिनिधि काठमांडो में उपस्थित रहे। किन्तु मैं नहीं जाऊँगा: मैं बी.पी को डिप्टी-प्राइममिनिस्टर के रूप में- सो भी, मोहन शमशेर के प्रधानमंत्रित्व में-नहीं देखना चाहता। इसकी कल्पना भी हमने नहीं की थी।"[7]

इस त्रिपक्षीय समझौते से नेपाल की सामाजिक शांति तो वापस आ गई। मगर राजनीतिक उथल-पुथल बरकरार रही।

'नेपाली क्रांति कथा 'में रेणु की मनो:स्थिति के अतिरिक्त व्याकुलता उनकी विचारधारा, नेपाली जनता के प्रति चिंता अभिव्यक्त होती है, उनका यह रिपोर्ताज नेपाली जनमानस के दुःख और संघर्ष से परिपूर्ण जीवन का स्मरणात्मक विवरण है। 'रेणु' के व्यक्तित्व को उजागर करने में नेपाल की जो भूमिका रही उसका निर्वाह उन्होंने नेपाल कि तत्कालीन परिस्थितियों में अपनी सक्रिय भूमिका द्वारा किया, फिर चाहे वह लेखनी से हो या प्रत्यक्ष रुप में। नेपाली मुक्ति युद्ध के सहयोगी सिपाही 'रेणु' के नाम से ना केवल कोइराला परिवार किंतु नेपाल का हर वर्ग परिचित है और यही उनको मानवीयता और नैतिकता के धरातल पर उत्कृष्ट मनुष्य और साहित्यकार बनाता है।

'नेपाली क्रांति कथा' नेपाल और भारत के लोगों के त्याग, बलिदान और समर्पण की कहानी मात्र नहीं हैं, इस रिपोर्ताज़ के अंत में रेणु को एहसास होता है की 'दिल्ली समझौता' या 'त्रिपक्षीय समझौता' जनतंत्र की माँग करती नेपाल की जनता को शांत करवाने का प्रलोभन मात्र है। फिर भी रेणु ने इसे असफल क्रांति के रूप में नहीं देखा क्योंकि रेणु की राजनीति विचारधारा की नींव जीवन के अनुभवों से हुई थी। वो भली भांति जानते थे की यह असफल नहीं वरन असमाप्त क्रांति है। रेणु का मानना था की नेपाली जनता पुनः अपने हितों के लिए आवाज़ बुलंद करेगी। नेपाल में परवर्ती क्रांतियां उनकी इसी बात का प्रमाण हैं। इस क्रांति के अंत में जिस मानसिक पीड़ा से उन्हें गुज़ारना

पड़ा उसे भी उन्होंने जाहिर करते हुए अपने स्केच “नेपाल और डॉ.कुलदीप झा में स्पष्ट लिखा है की ‘नेपाल की राजनैतिक पार्टियां, नेपाली क्रांति के जीत का श्रेय स्वयं लेती हो मगर जो भी ईमानदार इतिहासकार होगा वो इस बात को जरूर लिखेगा की राणा शाही को आखिरी चोट देने में भारत का दिल और दिमाग काम कर रहा थे।”[8]

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

1. रेणु रचनावली, भाग-5, सं. भारत यायावर, पृ.209
2. रेणु रचनावली, भाग-4 सं. भरत यायावर, पृ.208
3. रेणु रचनावली, भाग-4 सं. भरत यायावर, पृ.209
4. रेणु रचनावली, भाग-4 सं. भरत यायावर, पृ.208
5. रेणु रचनावली, भाग-4, सं. भारत यायावर, पृ.191
6. रेणु रचनावली, भाग-4, सं. भारत यायावर, पृ.247
7. रेणु रचनावली, भाग-4, सं. भारत यायावर, पृ.249
8. रेणु रचनावली, भाग-5, सं. भारत यायावर, पृ.136